[श्री राजनारायण]

पार्लियामेंट की डिगनिटी को यह सरकार बिलकुल नीचे गिराती चली जा रही है और इसको आप समझ लीजिए कि इस देश की जनता कैसे बर्दाश्त करेगी? मेरा आप से निवेदन है कि भूपेश गुप्त ने जो पाइन्ट उठाया है वह पाइन्ट हमारा भी है। छः दिन हुए, कोई कहीं है, कोई कहीं है। सब को नोटिस भेज दिया, किसी को मिला, किसी को नहीं मिला, यह क्या बात है...

MEMBERS SWORN

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, oath.

Shri Lal K. Advani (Gujarat).

Shri Sunder Singh Bhandari (Uttar Pradesh).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Leaders of the House to move the Resolution.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश): श्रीमन्, यह तो अधिकार हम लोग पूछने का रखते हैं कि एक साल के बाद यह शपथ क्यों ली जा रही है? साल भर के बाद शपथ लें, यह भारतवर्ष के जनतंत्र के लिए कलंक है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, the Leader of the House is moving the condolence resolution.

श्री राजनारायण: श्रीमन् इतनी देर से शपथ क्यों ली जा रही है, इसका कारण भी कुछ बता दीजिए।

OBITUARY REFERENCES

सभा के नेता (श्री कमलापति त्रिपाठी): श्रीमन्, श्री फखरुद्दीन अली अहमद के निधन से हमारे राजनैतिक जीवन में एक सूनापन आ गया है। दिवंगत राष्ट्रपति सन् 1931 मे कांग्रेस मे आये और चालीस वर्षों से अधिक समय तक सक्रिय राजनीति में रहे। इस अवधि में उन्होंने अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण पदों को सम्भाला और असम के महाधिवक्ता, राज्य मंत्रिमंडल एवं केन्द्रीय सरकार में मंत्री पद पर रहे। उन्होंने असम राज्य तथा केन्द्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1938 में असम में मंत्री बनने के बाद से लेकर जीवन भर उन्होंने अपनी अद्वितीय प्रशासकीय क्षमता का परिचय दिया। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने राज्य और केन्द्रीय सरकार में महत्वपूर्ण पदों को कुशलतापूर्वक सम्भाला। केन्द्र में उन्हें सन् 1966 में बुलाया गया। उसके बाद उन्होंने सिंचाई एवं विद्युत, औद्योगिक विकास, कम्पनी-कार्य तथा खाद्य एवं कृषि मंत्रालय सरीखे प्रमुख विभागों का कार्य-भार सफलतापूर्वक वहन किया।

श्री अहमद के हृदय में मानव मात्र के प्रति गहरी एवं व्यापक सेवा भावना थी। वे विनम्र, सौम्य और शांत प्रकृति के व्यक्ति थे और न्यायप्रियता एवं निष्पक्षता के बड़े हिमायती थे। देश के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित कर के उनके सेवापूर्ण महान जीवन को उचित गौरव प्रदान किया गया। उन्होंने आजीवन जनता के कल्याण तथा विश्व शांति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ाने के लिए अनवरत प्रयास किया।

दिवंगत राष्ट्रपति ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश की प्रगति के कार्यों में लगा दिया और धर्म-निरपेक्षता तथा लोकतंत्रीय मूल्यों की रक्षा की दिवंगत राष्ट्रपति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दिल्ली में आयोजित शोक सभा में विभिन्न विचारधाराओं के लोगों और विदेशी प्रतिनिधियों की उपस्थिति इस बात की द्योतक है कि श्री अहमद का न केवल अपने देशवासियों बल्कि विभिन्न राष्ट्रों की जनता के दिलों में भी बड़ा सम्मान था।